धर्मवीर भारती और प्रकाश पाडगाँवकार

की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती चन्द्रलेखा डिसौझा

मिलिन्द प्रकाशन
हैदराबाद

गोवा विश्वविद्यालय की ओर से प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशनार्थ आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है । लेखिका तत्संबंधी सहयोग हेतु गोवा विश्वविद्यालय, गोवा की आभारी है ।

प्रकाशक | ***मिलिन्द प्रकाशन***
4-3-178/2, कन्दस्वामी लेन,
सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.
फोन : 593159

प्रथम संस्करण | **1997**

© | **लेखिकाधिन**

मूल्य | **एक सौ पचास केवल** **Rs. 150/-**

DHARMVIR BHARTI AUR PRAKASH PADGAONKAR KI KAVITAON KA TULNATMAK ADHYAYAN - *CHANDRALEKHA D'SOUZA*

अनुक्रम

भूमिका

तुलनात्मक अध्ययन एवं आधार के प्रतिमान 17

तुलनात्मक अध्ययन की अवधारणा एवं राष्ट्रीय चेतना की समग्रता 21

तुलनात्मक अध्ययन : परिभाषा एवं क्षेत्र 21

तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप एवं व्याख्या 27

तुलनात्मक अध्ययन के प्रतिमान, मूल्य, संक्रमणशीलता और सौंदर्य बोध चेतना 31

प्रतिमान और मूल्य संक्रमणशीलता 33

मूल्य संक्रमणशीलता और कविद्वय का तुलनात्मक अध्ययन 37

नैतिकता और सौंदर्यबोधी चेतना 40

विवेच्य कवियों का सांस्कृतिक बोध शैलीगत नवाभिरुचि 42

तुलनात्मक अध्ययन की अंतर्विद्वयावर्ती प्रणाली 43

सांस्कृतिक बोध : प्रतिमान और विवेचन 47

शैलीगत नवाभिरुचि और नवप्रयोग 49

जीवन संघर्ष की मिथकीय चेतना, पक्षधरता और कवि कर्म 52

जीवन संघर्ष का मिथकीय बोध एवं परिवेश 53

जीवन संघर्ष की पक्षधरता और कवि कर्म 54

धर्मवीर भारती और प्रकाश पाडगाँवकार : जीवन संदर्भ और रचना संसार 60

धर्मवीर भारती : जीवन संदर्भ और कृतित्व 64

प्रकाश पाडगाँवकार : जीवन संदर्भ और कृतित्व 72

भारती एवं पाडगाँवकार का ऐतिहासिक बोध 77

युग चेतना और यथार्थपरक अनुशीलन 83

भारती और पाडगाँवकार की काव्य सृजना : दशा और दिशा 90

समकालीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य 91

समकालीन राजनीतिक परिदृश्य और कवि द्वय की अभिव्यक्ति 93

सांस्कृतिक चेतना और भारती-पाडगाँवकार की काव्य रचनाएँ 101

विवेच्य कवियों का वैचारिक आधार 108

भारती के काव्य का वैचारिक आधार : प्रगतिवाद, अस्तित्ववाद एवं रागात्मक बोध 110

पाडगाँवकार की काव्य सृजना : प्रगतिवाद और अरविन्द दर्शन का प्रकृत बोध 116

परम्परा और आधुनिकता बोध 122

भारती का काव्य : परम्परा और आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में 124

पाडगाँवकार के काव्य में परम्परा और आधुनिकताबोध की अभिव्यक्ति 127

मानवीय जिजीविषा और कवि द्वय की रचनाएँ 128

भारती का काव्य और मानवीय जिजीविषा 129

पाडगाँवकार की काव्य सृजना और मानवीय जिजीविषा 130

भारती और पाडगाँवकार की वैचारिक साम्यता एवं विभिन्नता 135

मूल्य चेतना के विभिन्न संदर्भ और कवि कर्म 136

मूल्य चेतना और कवि कर्म की सौद्देश्यता 135

मानवमूल्य और जीवन मूल्य की अभिव्यक्ति : कवि द्वय में 143

नारी जीवन के विभिन्न संदर्भ और यथार्थपरक बोध 157

भारती की रचनाओं में नारी और यथार्थ बोध 158

पाडगाँवकार का काव्य और नारी जीवन के यथार्थ परक संदर्भ 163

नैतिकता और नयी नैतिकता का संदर्भ और कवि द्वय 164

भारती का काव्य : नैतिकता और नयी नैतिकता 167

पाडगाँवकार-काव्य : नैतिकता और नयी नैतिकता 168

विवेच्य कवियों का सौंदर्य बोध 170

भारती के काव्य का रागात्मक बोध 171

पाडगाँवकार का काव्य : प्राकृतिक परिवेश और मानवीय उदात्तता 173

भारती एवं पाडगाँवकार की काव्य सृजना : भाषा, शिल्प, सम्प्रेषणीयता व नवप्रयोग 181

भाषा की नयी तराश और शिल्प संबंधी रचना 182

भाषा की नयी तराश : भारती एवं पाडगाँवकार की रचनाभिव्यक्ति 184

शिल्प संबंधी विवेचन : भारती और पाडगाँवकार के संदर्भ में 188

सम्प्रेषणीयता और रचना कर्म 192

भारती का रचना कर्म और सम्प्रेषणीयता 193

पाडगाँवकार का रचनाकर्म व सम्प्रेषणीयता 196

भारती की नाट्यमुखी रचनाएँ एवं नवप्रयोग 198

भारती का अंधायुग और नाट्यमुखी सृजना पौराणिक संदर्भों की रचना 198

कनुप्रिया और प्रमथ्युगाथा संबंधी नवप्रयोग 200

पाडगाँवकार का कवि कर्म और कोंकणी काव्य में नूतन आयाम 203

पाडगाँवकार के कवि कर्म की सौद्देश्यता 204

कोंकणी काव्य सृजना के अभिनव आयाम और प्रकाश पाडगाँवकार 207

भारती एवं पाडगाँवकार की काव्य सृजना : बिम्ब, प्रतीक, मिथक एवं फ़ैण्टेसी संदर्भ 211

बिम्ब विधान एवं कवि द्वय का काव्य संसार 213

प्रकाश पाडगाँवकार के काव्य में बिम्बात्क अभिव्यक्ति 218

प्रतीक विधान और भारती-पाडगाँवकार की काव्य सृजना 220

भारती का काव्य और प्रतीक संदर्भ 223

पाडगाँवकार की काव्य सृजना और प्रतीक विवेचन 226

फ़ैण्टेसी संबंधी रचना कर्म और कवि द्वय 228

पाडगाँवकार की रचनाओं में फ़ैण्टेसी संदर्भ 232

भारती और पाडगाँवकार की रचनाओं में मिथकीय संदर्भ 235

भारती का काव्य संसार : मिथकीय संदर्भ 238

पाडगाँवकार की काव्य सृजना और मिथकीय संदर्भ 240

समकालीन हिंदी एवं कोंकणी काव्य सृजना में विवेच्य कवियों का योगदान 246

भारती का युग बोध और समकालीन कविता 246

पाडगाँवकार का यथार्थबोध और कोंकणी काव्य 249

सौंदर्यबोध के नये धरातल और विवेच्य कवियों का मूल्यांकन 252

सहायक ग्रंथ सूची 257